Krishnagar Academy
Subject - 2nd Lang. Hindi
class - XII

आषाढ़ का एक दिन

प्रश्न: 1. "राजनीति साहित्य नहीं है। उसमें एक-एक क्षण का महत्व है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक जाए तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।"

(i) वक्ता कौन है? प्रसंग स्पष्ट करते हुए बताइए?

(ii) राजनीति का साहित्यकार पर क्या प्रभाव पड़ता है? कालिदास के प्रसंग में संकेत दीजिए?

(iii) वक्ता ने राजनीति और साहित्य के विषय में कैसे विचार दिए हैं?

उत्तर(i) प्रस्तुत संवाद के वक्ता कालिदास की पत्नी प्रियंगुमंजरी है। राजधानी जाकर कालिदास को राजकुमारी प्रियंगुमंजरी से विवाह करना पड़ा। कालिदास अब मातृगुप्त के नाम से जाने जाते हैं। अब वे कश्मीर का शासन संभालने जा रहे हैं। मार्ग में प्रियंगुमंजरी, मल्लिका से भेंट करने आती है। मल्लिका के घर में कालिदास की रचनाओं की प्रतियों को देखकर वो हैरान होती है। मल्लिका उसे बताती है कि उसने ये राजधानियों से आने वाले व्यवसायियों से प्राप्त किया है। प्रियंगुमंजरी व्यंग्य से मुस्कराकर कहती है कि यह स्वाभाविक ही है, क्योंकि कालिदास प्रायः ही

उसकी चर्चा किया करते हैं और कभी-कभी तो राजनीतिक कार्यों से उनका मन उखड़ने लगता है।

उत्तर: 2) प्रस्तुत नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में नाटककार मोहन राकेश ने राजनीति और साहित्य के अन्तर को स्पष्ट करते हुए अपने उद्देश्य की ओर स्पष्ट संकेत किया है कि राजनीति साहित्यकार की प्रतिभा को कुंठित कर देती है। वह साहित्यकार न रहकर राजनीतिज्ञ बन जाता है। इस स्थिति में वह साहित्य सृजन करता भी है तो उसमें वह कल्पना और मार्मिकता नहीं होती।

उत्तर:3) प्रियंगुमंजरी कहती है कि राजनीति साहित्य नहीं है। राजनीति से सम्बंध रखने वाला स्वतंत्र नहीं होता। उसमें भावनाओं, कल्पनाओं का कोई स्थान नहीं होता है। राजनीति में तो एक-एक क्षण की कीमत होती है। उसका महत्व होता है। प्रतिक्षण यथार्थ पर नजर रखनी पड़ती है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक हो जाए तो बहुत बड़ी हानि हो सकती है। अतः राजनीति में प्रवेश करने वाले व्यक्ति पर कई तरह के बंधन होते हैं। एक राजनीतिज्ञ साहित्यकार की तरह स्वतंत्र नहीं होता। इसीलिए राजनीति में रहने वाले व्यक्ति को बहुत सावधान रहना पड़ता है। भावुकता, कल्पना के लिए वहाँ कोई स्थान नहीं होता है।

प्रश्न: 2. अनुस्वार और अनुनासिक शब्दों के अर्थ क्या हैं?

उत्तर: (क) अनुस्वार - जब किसी वर्ण का उच्चारण करने में केवल नाक से हवा निकले तो इसे अनुस्वार ध्वनि कहते हैं। इसका उच्चारण कुछ जोर से होता है। इसे दिखाने के लिए शिरोरेखा के ऊपर (-) चिह्न का प्रयोग किया जाता है। सामान्यतः यह वर्ग के पांचवे वर्ण के लिए किया जाता है, जैसे- संतरा, संगम, लंबा आदि।

ऐतिहासिक नाटकों में नाटककार अपने मस्तिष्क शक्ति/पात्र या घटना को अपनी कल्पना के अनुसार एक सजीव रचना का रूप देता है। नाटककार समाज में फैली कई कहानियों को इकट्ठा करता है और अपनी कल्पना के माध्यम से उसे एक नया रूप देता है। यदि ऐसा न किया जाए तो वह एक नाटक न होकर इतिहास ही रह जाएगा।

मोहन राकेश जी स्वतंत्रता के बाद के नाटककारों में से है परन्तु उनकी लेखनी में सच्चाई और स्वाभाविकता दोनों ही गुण देखने को मिलते हैं।

'आषाढ़ के एक दिन' नाटक का कथानक संस्कृत भाषा के कवि कालिदास के जीवन से सम्बंधित है। कालिदास एक ऐतिहासिक व्यक्ति है। किन्तु इनका जन्म कब, कहाँ और किन परिस्थितियों में हुआ? इसका कोई वास्तविक प्रमाण नहीं मिलता। केवल समाज में फैली कुछ धारणाओं के आधार पर कुछ इसे बंगाली तो कुछ विदर्भ का रहने वाला तो कुछ इसे कश्मीरी पंडित मानते हैं परन्तु मोहन राकेश जी अपने नाटक में कालिदास को एक ऐतिहासिक पुरुष की संज्ञा न देकर एक सामान्य पुरुष/व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है। जिसमें गुण और दोष दोनों ही हैं। नाटक को विवादास्पद न बनाते हुए उन्होंने कालिदास को पर्वतीय क्षेत्र का बताया जो उज्जयिनी के उत्तर में हो सकती है।

नाटक में प्रियंगुमंजरी द्वारा भी कालिदास के ग्राम-प्रांतर के विषय में सिर्फ इतना ही बताया गया है- वहाँ से बहुत दूर तक की पर्वत श्रृंखलाएँ दिखाई देती हैं। आज इस भूमि का आकर्षण हमें यहाँ ले आया है अन्यथा दूसरे मार्ग से हम अधिक सुविधापूर्वक कश्मीर पहुँच सकते थे।

इसके अलावा इस नाटक में ग्राम की औषधियाँ, पर्वत श्रृंखलाएँ और हिरणों के शावक हैं जिससे सिद्ध होता है कि इसमें कुछ कल्पना का मिश्रण भी है।

अनुनासिक - जिस वर्ण का उच्चारण करते समय नाक एवं मुख से हवा निकले तो उसे अनुनासिक कहते हैं। शिरोरेखा के ऊपर चंद्र बिंदु (ँ) के रूप में लगाया जाता है। जैसे - चाँद, मुँह, हँसा आ

प्रश्न: 3. यवनिका का क्या अर्थ है?

उत्तर: किसी भी नाटक का जब रंगमंच पर मंचन किया जाता है तब यवनिका का प्रयोग होता है। साधारण शब्दों में यवनिका 'परदे' को कहते हैं। नाटक के मंचन से पूर्व रंगमंच पर पर्दा गिरा रहता है और यह परदा नाटक प्रारम्भ होने पर उठाया जाता है। कभी-कभी रंगमंच पर एक से अधिक व्यक्तियों का भी आगमन होता है। कुछ नाटक जिनमें रंगमंच की सज्जा में दृश्य के अनुसार परिवर्तन की जरूरत होती है वहाँ बार-बार साज सज्जा में परिवर्तन न करके थोड़ी-थोड़ी दूर पर एक से अधिक यवनिकाएँ लगा दी जाती हैं और आवश्यकता के अनुसार उन्हे उठाया और गिराया जाता है।

प्रश्न: 4. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक इतिहास और कल्पना का मिश्रण है, सिद्ध कीजिए।

उत्तर: साहित्य में बहुत पहले से ही इतिहास को आधार बनाकर कथा साहित्य की रचना की जाती रही है। नाटककारों ने भी इतिहास के आधार बनाकर अनेको नाटक लिखे हैं। इनमें मोहन राकेश का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। उनके द्वारा लिखे गए 'लहरों के राजहंस' और 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक ऐतिहासिक श्रेणी में आने वाला नाटक है